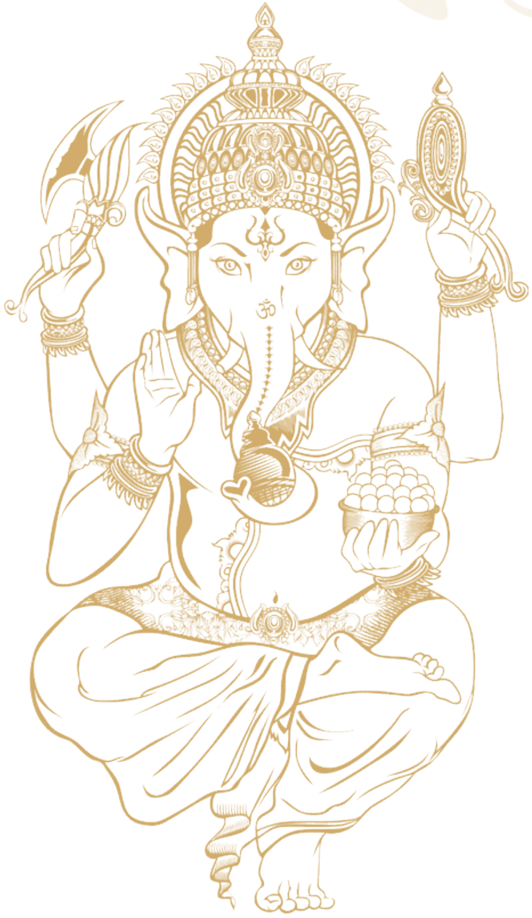

Mr.

10 May 2023

09:00 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120313601

तिथि 10/05/2023 **समय** 09:00:00 **वार** बुधवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:10:49
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	23:49:36 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:03:34 घं	योनि	वानर
सूर्योदय	05:34:02 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	19:01:30 घं	वर्ण	क्षत्रिय
चैत्रादि संवत	2080	वश्य	मानव
शक संवत	1945	वर्ग	मूषक
मास	ज्येष्ठ	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	अग्नि
तिथि	5	जन्म नामाक्षर	फा-फारुख
नक्षत्र	पूर्वाषाढ़ा	पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
योग	साध्य	होरा	गुरु
करण	तैतिल	चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी
शुक्र 6वर्ष 5मा 2दि
शुक्र
10/05/2023
11/10/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/05/2023
शनि	11/10/2025
बुध	11/08/2028
केतु	11/10/2029

योगिनी
सिद्धा 2वर्ष 2मा 29दि
संकटा
08/08/2025
08/08/2033

संकटा	19/05/2027
मंगला	09/08/2027
पिंगला	18/01/2028
धान्या	17/09/2028
भ्रामरी	08/08/2029
भद्रिका	18/09/2030
उल्का	18/01/2032
सिद्धा	08/08/2033

ग्रह	व	अ	अंश राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			15:47:33 मिथु	आर्द्रा	3	राहु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			25:03:38 मेष	भरणी	4	शुक्र	बुध	उच्च राशि	1.46	अमात्य	पितृ	जन्म
चंद्र			22:23:03 धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	शनि	सम राशि	1.16	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			29:53:16 मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि	1.12	आत्मा	भ्रातृ	साधक
बुध	व	अ	12:36:18 मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	सम राशि	1.20	मातृ	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			04:18:07 मेष	अश्विनी	2	केतु	चंद्र	मित्र राशि	1.33	कलत्र	धन	अतिमित्र
शुक्र			08:36:23 मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	मित्र राशि	1.37	ज्ञाति	कलत्र	प्रत्यारि
शनि			11:49:58 कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मूलत्रिकोण	1.20	पुत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		09:46:52 मेष	अश्विनी	3	केतु	शनि	शत्रु राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		09:46:52 तुला	स्वाति	1	राहु	गुरु	सम राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

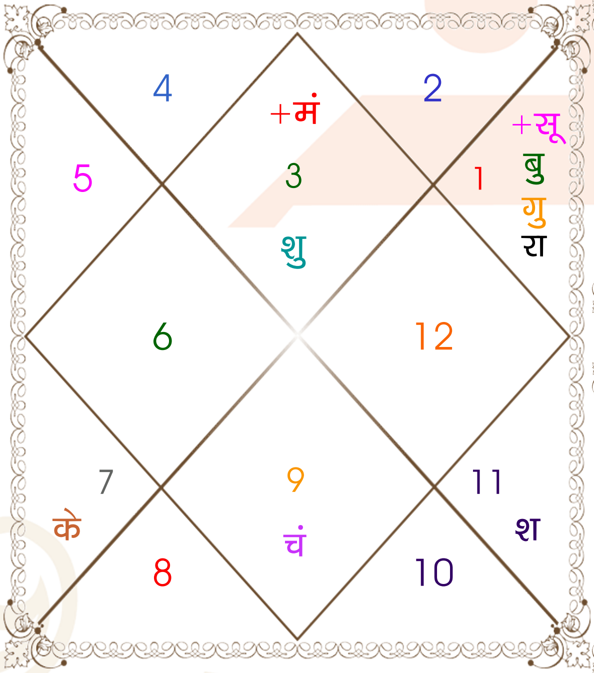

चन्द्र कुंडली

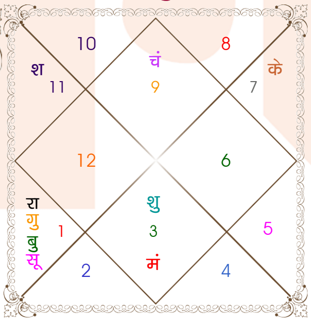

नवमांश कुंडली

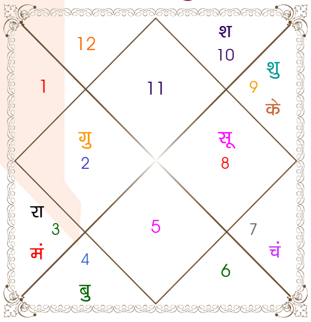

सर्वाष्टकवर्ग

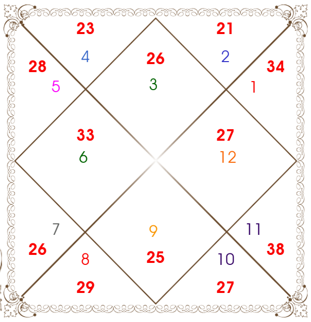

दशमांश कुंडली

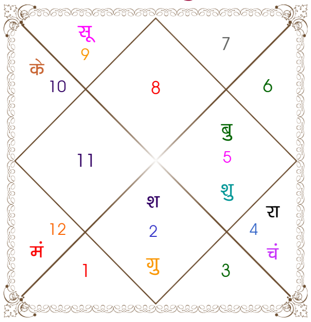

FUTUREPOINT Astro Solutions
एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोनः- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

नक्षत्रफल

आप पूर्वाषाढा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी मध्य, योनि वानर तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके नाम का प्रथम अक्षर "फ" या "फा" से प्रारम्भ होगा।

आप अपने सम्पूर्ण जीवन में समस्त सुखैश्वर्य का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। आप अन्य लोगों से अत्यन्त ही मधुर तथा शालीनता के साथ व्यवहार रखेंगे जिससे आपसे सभी प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने सम्भाषण में भी प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे। चरित्र से आप उत्तम रहेंगे। धनधान्य से भी आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में सामान्यतया इसका अभाव महसूस नहीं करेंगे। साथ ही आपकी पानी पीने की इच्छा भी अधिक होगी तथा बार बार इसका उपयोग करेंगे।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चत्रचद्वागविलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपको सुन्दर सुशील तथा गुणवती स्त्री की पत्नी के रूप में प्राप्ति होगी जो आपको समस्त प्रकार से सुख एवं आनन्द प्रदान करने में समर्थ रहेगी। समाज में आप एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त होंगे। आप हमेशा स्थिर मित्रता के इच्छुक रहेंगे। अतः आपकी मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं रहेगा तथा जो भी मित्र होंगे वे सभी बुद्धिमान तथा गुणवान होंगे। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य भी स्थिर रूप से आपके पास रहेगा।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आपके हृदय में प्रारम्भ से ही अन्य जनों के उपकार करने की भावना विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल परिचितों के अतिरिक्त अपरिचित जनों की भी आप यत्न पूर्वक भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगे। इससे आपके सामाजिक सम्मान तथा स्थिति में नित्य अभिवृद्धि होती रहेगी। भाग्य सर्वथा आपके साथ रहेगा तथा अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप अल्प परिश्रम से ही पूर्ण करने में सक्षम रहेंगे तथा समाज के

सभी वर्गो को अपना सहयोग तथा स्नेह प्रदान करेंगे। अतः सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। आप एक उच्चकोटि के विद्वान तथा बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने तथा विभिन्न कार्यो को सम्पन्न करने में आप दक्षता प्राप्त होंगे।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप के आचार विचार उत्तम रहेंगे तथा समाज में सब प्रकार से आदरणीय रहेंगे। आपका स्वभाव हमेशा शान्त रहेगा। अतः किसी भी विषम परिस्थितियों में आप उत्तेजित नहीं होंगे तथा शान्तिपूर्वक उसका समाधान करेंगे।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरुष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

धनु राशि में जन्म लेने के कारण आपका गला एवं मुखभाग दीर्घाकार रहेगा। साथ ही आपके कान, ओंठ, दान्त भी स्थूल रहेंगे। तथा भुजाएं पुष्ट रहेंगी। आप को अपने पिता से पूर्ण धन सम्पति प्राप्त होगी। जिसका आप जीवन में सुखपूर्वक उपभोग कर सकेंगे। आपके मन में दान शीलता की प्रवृति भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। आप लेखन कार्य में भी रूचिशील तथा यत्नशील रहेंगे फलतः कविता सृजन में आपको सफलता तथा ख्याति प्राप्त हो सकती हैं। आप एक बलशाली पुरुष होंगे तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में भी आप निपुण रहेंगे तथा अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा सामाजिक जनों को प्रभावित करने में पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त करेंगे चित्रकला आदि में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप विशेष योग्यता भी अर्जित कर सकेंगे। आप स्वभाव से गम्भीर होंगे तथा गम्भीरता तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी

आपके मन श्रद्धाभाव रहेगा तथा इसके विषय में आप विस्तृत ज्ञान भी स्वपरिश्रम से अर्जित करेंगे। आपके अपने बन्धुवर्ग से संबंध सामान्य तथा औपचारिक रहेंगे। आपको केवल प्रेम तथा समानता के व्यवहार से ही वश में किया जा सकेगा। दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ भी नहीं करवाया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योऽश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपके नेत्र गोलाकृति लिए अत्यन्त ही सुन्दर प्रतीत होंगे। साथ ही हाथ एवं कन्धे भी लम्बाई में अधिक हो सकते हैं। आपका सीना विशाल तथा विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। जल के समीप निवास करना या भ्रमणादि करना आपको अत्यन्त ही प्रिय लगेगा तथा ऐसे अवसर प्राप्त करने के लिए आप प्रायः प्रयत्नशील ही रहेंगे। आप कठिन से कठिन विषय को हृदयगंम करने में हमेशा सफल रहेंगे। साथ ही आप हमेशा हृदय से प्रसन्नचित रहेंगे। अनावश्यक चिन्ता या दुःख आप नहीं करेंगे। आपके शरीर की हड्डियां भी पुष्ट एवं मजबूत रहेगी। आप में कृतज्ञता का गुण विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका आभार मानेंगे तथा हृदय से उनका उपकार स्वीकार करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घांसो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोऽस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक परिश्रमी पुरुष होंगे तथा हमेशा किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे। आप बोलने में भी निपुण रहेंगे। तथा अपनी वाक्पटुता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आसानी से सिद्ध कर लेंगे। आप एक त्यागी पुरुष होंगे तथा जीवन में कई बार इस प्रवृति का पालन भी करेंगे। आपमें साहस तथा बहादुरी का भाव भी सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप समस्त कार्यों को निर्भीकता से सम्पन्न करेंगे। आपके शत्रु आपसे पराजित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में प्राय असमर्थ ही रहेंगे। साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग तथा धनाढ्य लोंगों के प्रिय होंगे तथा उनसे पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुर्नृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार के कार्यो तथा कलाओं में दक्ष रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र तथा सुशील रहेगा एवं आपका चरित्र भी निर्मल एवं अनुकरणीय रहेगा साथ ही आप स्पष्ट बोलने वाले व्यक्ति होंगे तथा जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से किसी के भी सामने कह देंगे। पीठ पीछे कहने की आपकी आदत नहीं होगी। इसके साथ ही आप अपनी आय के अनुसार ही सोच विचार कर व्यय करेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शारीरिक अंग सुन्दर तथा सुडौलता से युक्त रहेंगे। आप अपने कुल या परिवार में सर्वमान्य या श्रेष्ठ समझे जाएंगे तथा सभी कुलीन जन आपको यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। चित्रकारी तथा इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्र में भी आप विशिष्ट सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर तथा साहसी व्यक्ति होंगे। सत्य के प्रति आपकी हार्दिक निष्ठा रहेगी। तथा आजीवन इसके अनुपालन में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप सत्व गुणों से भी सम्पन्न रहेंगे। आप एक दयालु पुरूष होंगे तथा किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए आपके मन में द्वेष या वैमनस्य का भाव नहीं रहेगा। आप एक बुद्धिमान तथा धनवान पत्नी से युक्त होकर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। विभिन्न प्रकार के नाटकों के करने में भी आप रूचि शील रहेंगे तथा हमेशा मधुर एवं प्रिय वाणी का अपने संवादों में प्रयोग करेंगे। आपका शरीर स्थूल होगा तथा कभी कभी आपके आपके किसी कार्य से आपके पूर्ण परिवार तथा कुल को परेशानी तथा कष्टानुभूति करनी पड़ सकती है।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप सर्व गुणों से सम्पन्न रह कर आप समाज में एक श्रद्धेय तथा सम्मानीय व्यक्ति समझे जाएंगे। अपने बन्धु वर्ग में भी आप को श्रेष्ठता प्राप्त रहेंगे। साथ ही देवता, ब्राहमणों तथा गुरूजनों के प्रति भी आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा। जिसका आप समय समय पर अनुपालन भी करते रहेंगे। आप की चाल अत्यन्त ही आकर्षण तथा दर्शनीय होगी। परन्तु आप में सहन शक्ति का अभाव रहेगा। इससे कई बार आपको अनावश्यक रूप से मानसिक तथा आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरुपचेता बन्धुर्वर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।

मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा तथा पूजा का भाव रखने वाले पुरूष होंगे साथ ही आप अन्य कार्यो तथा कलाओं के विषय में भी जानकारी रखने वाले होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा समस्त कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य जनों को सुख प्रदान करने वाले भी होंगे।

आपका शारीरिक सौर्न्दय अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा जीवन में आप अपनी इस प्रवृति का समय समय पर पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आप सादगी से जीवन व्यतीत करने में रूचिशील रहेंगे तथा अनावश्यक दिखावटीपन से आप दूर ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में एक महान विद्वान के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव में कभी कभी चंचलता भी रहेगी। आप मिष्ठान प्रिय रहेंगे तथा मीठे पदार्थो के भक्षण में अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप धन के प्रति लोलुपता का प्रदर्शन भी करेंगे तथा इसे प्राप्त करने के लिए अत्यन्त ही अधीरता का परिचय देंगे। आपकी प्रवृति विवाद की ओर भी जागृत रहेगी अतः समय समय पर अन्य जनों से आपका विवाद होता रहेगा। काम की भी आप में प्रबलता रहेगी। आपकी सन्तान गुणवान एवं बुद्धिमान रहेगी। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी तथा वीर पुरूष भी होंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में

आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिल करण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि का चन्द्रमा प्रायः अशुभ फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों भरणी नक्षत्र वज्र योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण या क्रय विक्रय आदि कार्यो को शुभारम्भ न करें। अन्यथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फलों की ही प्राप्ति होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सजग रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा न चल रहा हो मानसिक परेशानी शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि नौकरी या प्रोन्नति में बाधा तथा अन्य कार्यो में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं वृहस्पतिवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीत पुष्प, पीली चन्दन, चने की दाल तथा हल्दी आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्यपात्र को दान करना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप करने से आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी एवं शुभ फलों में वृद्धि होगी जिससे आपकी समस्त विघ्न बाधाएं दूर होंगी एवं अन्य लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।